इकाई 15 अनौपचारिक शिक्षा और सामुदायिक रेडियो

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य
15.1 प्रस्तावना
15.2 अनौपचारिक शिक्षा
  15.2.1 अनौपचारिक शिक्षा क्या है?
  15.2.2 अनौपचारिक शिक्षा की आवश्यकता
  15.2.3 अनौपचारिक शिक्षा के लाभ और सीमाएँ
15.3 औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अंतर
15.4 अनौपचारिक शिक्षा में रेडियो की भूमिका
15.5 रेडियो प्रसारणों का बदलता दायरा
  15.5.1 प्राथमिक केंद्र
  15.5.2 स्थानीय रेडियो केंद्र
  15.5.3 सामुदायिक रेडियो केंद्र
  15.5.4 शैक्षिक रेडियो केंद्र
15.6 रेडियो कार्यक्रमों में अनौचारिक शिक्षा के लिए विषय-वस्तु
  15.6.1 संप्रेषण कौशल में विस्तार
  15.6.2 परिवर्तनों को स्वीकारने हेतु लचीलापन
  15.6.3 मानव संबंधों में सुधार
  15.6.4 जन-सहभागिता हेतु प्रोत्साहन
  15.6.5 व्यक्तित्व विकास
15.7 रेडियो कार्यक्रम प्रस्तुति के विविध रूप
15.8 सारांश

15.0 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा उद्देश्य अनौपचारिक शिक्षा में रेडियो की भूमिका और उसके उपयोग के बारे में बताना है। साथ ही रेडियो के लिए तैयार किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की लेखन विधि और प्रस्तुतीकरण के सिद्धांतों के बारे में समझ सकेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप अनौपचारिक शिक्षा के बारे में जान सकेंगे। अनौपचारिक और औपचारिक शिक्षा के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट कर सकेंगे। अनौपचारिक शिक्षा के प्रसार में रेडियो की भूमिका को रेखांकित कर सकेंगे। रेडियो के लिए अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के प्रस्तुतिकरण की जरूरतों को समझ सकेंगे। अनौपचारिक शिक्षा के लिए स्थानीय और सामुदायिक रेडियो की संभावनाओं के बारे में सोच सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

आजादी के बाद से हमारे देश में शिक्षा का विस्तार तेजी से हुआ है। साक्षरता अभियान और गैर सरकारी संगठनों की सहायता से देश में निरक्षरों की संख्या घटी है। बढ़ती आबादी के कारण औपचारिक शिक्षा की समुचित सुविधाएँ पूरे देश में अभी भी नहीं हो सकी हैं। देश के अनेक ग्रामों और दूर-दराज़ के क्षेत्रों और आदिवासी बहुल इलाकों में स्कूलों, शिक्षकों और शिक्षण-सामग्री की पर्याप्त व्यवस्था नहीं हो सकी है। अतः अनौपचारिक शिक्षा को अब काफी महत्व दिया जा रहा है। अनौपचारिक शिक्षा एक ऐसा लचीला तरीका है जो स्थानीय परिवेश के अनुसार समाज के सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों और भौगोलिक परिस्थितियों के कारण पिछड़े इलाकों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है।

अनौपचारिक शिक्षा से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के बच्चों, अशिक्षित युवकों और प्रौढ़ तथा महिलाओं को शिक्षित करने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा शहरों और गाँवों में रहने वाले वे बच्चे और बड़े जो विभिन्न कारणों से अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ चुके हैं उन्हें फिर से शिक्षा की मुख्य धारा में लाने का प्रयास अनौपचारिक शिक्षा-पद्धति करती है।

शिक्षा के देशव्यापी प्रसार में जनसंचार माध्यमों, विशेष कर रेडियो और टेलीविज़न की भूमिका महत्वपूर्ण मानी गई है। रेडियो तो पिछले आठ दशकों से अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। आकाशवाणी के प्राथमिक केंद्रों के अलावा जिला स्तर पर चल रहे स्थानीय रेडियो केंद्र अनौपचारिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भरपूर योगदान दे रहे हैं। अब सामुदायिक रेडियो केंद्रों (कम्युनिटी रेडियो स्टेशन) स्थापित किए जा रहे हैं, जिनकी स्थापना, संचालन, प्रबंधन और कार्यक्रम निर्माण आदि सभी प्रक्रियाएँ विभिन्न शैक्षिक संस्थानों, जन निकायों और स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से की जाती है। ये केंद्र अपनी आवश्यकता और आकांक्षाओं के अनुरूप अपने ही परिवेश में उपयोगी कार्यक्रम प्रसारित कर सकेंगे ऐसी आशा है। शैक्षिक रेडियो का विस्तार भी तेजी से हो रहा है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय विभिन्न क्षेत्रों में ‘ज्ञानवाणी’ नामक रेडियो चैनल खोल रहा है उनमें से अनेक ने कार्य करना प्रारंभ कर दिया है। इस तरह अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो एक सस्ता और सर्वसुलभ माध्यम होने के कारण उपयोगी रहेगा। इस इकाई में अनौपचारिक शिक्षा के लिए रेडियो की भूमिका और उसके लिए तैयार किए जाने वाले कार्यक्रमों की चर्चा विस्तार से की जाएगी।

15.2 अनौपचारिक शिक्षा

15.2.1 अनौपचारिक शिक्षा क्या है?

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है कि सबसे ऊंची और अच्छी शिक्षा वह नहीं है जो केवल सूचना दे बल्कि उसे जीवन में सभी स्तरों पर सामंजस्य बनाए रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बारे में अधिकांश लोगों की मान्यता है कि वह हजारों की संख्या में स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त युवकों की फौज तैयार करने वाली एक फैक्ट्री मात्र है। वास्तव में ऐसी शिक्षा के बावजूद अधिकांश लोग "शिक्षित अनपढ़ " रह जाते हैं वे जीवन मूल्यों जैसे अनुशासन, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक मूल्यों को भूलने लगते हैं। पैसा कमाने की धुन में वे समाज में सक्रिय भूमिका नहीं निभा पाते। इस कारण परिवारों के बिखरने और समाज के विघटन की प्रक्रिया तेजी से बढ़ रही है। आज आवश्यकता ऐसे नागरिक तैयार करने की है जो प्रजातांत्रिक मूल्यों में आस्था रखते हुए मानव मूल्यों का आदर भी करें। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु अनौपचारिक शिक्षा पद्धति का जन्म हुआ। वस्तुतः औपचारिक शिक्षा के हमारे सभी तरीके समाज के सभी वगों तक शिक्षा पहुँचाने में नाकाम रहे हैं। औपचारिक शिक्षा में अनेक पाबंदियाँ हैं जो उन्हें शिक्षा प्राप्त करने से रोकती हैं। अनेक बच्चे, युवा और प्रौढ़ अपनी सामाजिक या आर्थिक परिस्थितियों के कारण अपने परिवार या गाँव से बाहर जाकर काम करने के लिए मज़बूर हैं। इस कारण वे औपचारिक शिक्षा के ढाँचे को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। अनौपचारिक शिक्षा सभी तरह की औपचारिकताओं को तोड़ कर शिक्षा देने की पद्धति है। इसमें बच्चे और बुजुर्ग सभी लोग अपने पास उपलब्ध समय, साधन और आवश्यकताओं के अनुरूप अपने ही परिवेश में शिक्षा ले सकते हैं।

15.2.2 अनौपचारिक शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षाशास्त्रियों का मानना है कि किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में पाँच मुख्य तत्व होते हैं, जो कार्यक्रम को प्रभावित कर सकते हैं। ये हैं :

- अध्यापक,
- शिक्षार्थी,
- शिक्षण सामग्री,
- शिक्षा पद्धति, और
- परिवेश।

औपचारिक शिक्षा में इन तत्वों में काफी सामंजस्य बनाए रखने का प्रयास होता है किंतु सबसे महत्वपूर्ण तत्व परिवेश पर समुचित ध्यान नहीं दिया जाता। इस कारण शिक्षा की चाहे रखने वाले लोग अपने परिवेश से कट कर शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। अनौपचारिक शिक्षा में परिवेश पर सबसे अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है। अनौपचारिक शिक्षा में विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि पर पूरा ध्यान दिया जाता है। उन्हें इस प्रकार रोचक ढंग से शिक्षित करने का प्रयास होता है कि वे और अधिक शिक्षा प्राप्त करने को प्रेरित हों। अनौपचारिक शिक्षा का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है, शिक्षा को सीधे रोज़गार से जोड़ने पर अधिक जोर दिया जाता है।

अनौपचारिक शिक्षा को अपनाने के लिए प्राथमिकता उन क्षेत्रों को दी जाती है जहाँ अधिक संख्या में लोग पढ़ाई को बीच में छोड़ देते हैं। ऐसे क्षेत्रों में आदिवासी बहुल इलाके हैं, पहाड़ी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, कम आबादी वाले क्षेत्र और गंदी बस्तियों को शामिल किया जा सकता है। अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक जोर पढ़ाई बीच में छोड़ने वाले लोगों और महिलाओं की शिक्षा पर दिया जाना चाहिए।

अनौपचारिक शिक्षा के अंतर्गत ऐसे लोगों को लिए भी कार्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं जो अनपढ़ या कम पढ़े लिखे हैं उनमें उनकी पढ़ाई-लिखाई, उनके समुदाय में उन्नति और क्षेत्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम बनाए जा सकते हैं।

एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र कारखानों और उद्योग धंधों में कार्यरत कर्मचारियों का तकनीकी स्तर और विशेषज्ञता बढ़ाने का हो सकता है। गृहणियों और सेवानिवृत बुजुर्गों की जानकारी बढ़ाने वाले कार्यक्रम भी तैयार किए जा सकते हैं। अनौपचारिक शिक्षा का एक उद्देश्य कार्य और शिक्षा में तालमेल बढ़ाना हे, इस शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- नीरस शिक्षा के स्थान पर सरस ढंग से सिखाने पर जोर
- एक-दूसरे से सीखने की क्षमता पर अधिक ध्यान
- शिक्षा के दौरान भी विद्यार्थियों का निरंतर मूल्यांकन
- सहभागितापूर्ण शिक्षण का वातावरण
- शिक्षार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप पढ़ाई के कार्यकलापों में विविधता

15.2.3 अनौपचारिक शिक्षा के लाभ और सीमाएँ

लाभ

- अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से लाखों बच्चों, युवकों और प्रौढ़ों को शिक्षा दी जा सकती है, जो अभी औपचारिक शिक्षा के दायरे से दूर हैं।
- अनौपचारिक शिक्षा जनतंत्रीकरण का प्रमुख माध्यम है। इस पद्धति में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही अपने ज्ञान और अनुभव को निर्भीकता से बाँट सकते हैं।
- अनौपचारिक शिक्षा हर स्तर पर उपलब्ध कराई जा सकती है। अभी आदिवासी क्षेत्रों, पहाड़ी क्षेत्रों और दूरदराज के इलाकों में औपचारिक शिक्षा के प्रबंध में कठिनाइयाँ हैं। अनौपचारिक शिक्षा वहाँ आसानी से सभी को उपलब्ध कराई जा सकती है।
- जो लोग अपनी पढ़ाई किन्हीं कारणों से बीच में छोड़ चुके हैं वे उपलब्ध साधनों और समय के अनुसार अपनी शिक्षा को आगे बढ़ा सकते हैं।

सीमाएँ

- अनौपचारिक शिक्षा पद्धति, औपचारिक शिक्षा का स्थान नहीं ले सकती क्योंकि उच्च शिक्षा के लिए नियमित और व्यवस्थित क्रम में पढ़ाई आवश्यक है।
- अनौपचारिक शिक्षा में शिक्षार्थी को सीखने के लिए मानसिक रूप से तैयार रहना/करना आवश्यक है।
- अनौपचारिक शिक्षा की सफलता अच्छे शिक्षकों और परिवेश के अनुरूप उसे ढाल सकने वाले समर्पित कार्यकर्ताओं पर निर्भर है। इस शिक्षा पद्धति में सम्मिलित करने के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं और जनसेवकों को प्रशिक्षित किया जा सकता है। रेडियो के कार्यक्रम अनौपचारिक शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

15.3 औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अंतर

औपचारिक शिक्षा निर्धारित समय पर निश्चित अवधि के लिए ही दी जाती है। उसका पाठ्यक्रम निर्धारित रहता हे। विद्यार्थी को अधिकतम ज्ञान देने का प्रयास किया जाता है। अकादमिक ज्ञान पर जोर होने के कारण वे कठिनाई महसूस करते हैं। औपचारिक शिक्षा एकतरफा शिक्षा है। इसमें शिक्षक ज्ञान का भंडार है। वह विद्यार्थियों पर अपना ज्ञान निरंतर उड़ेलता रहता है।

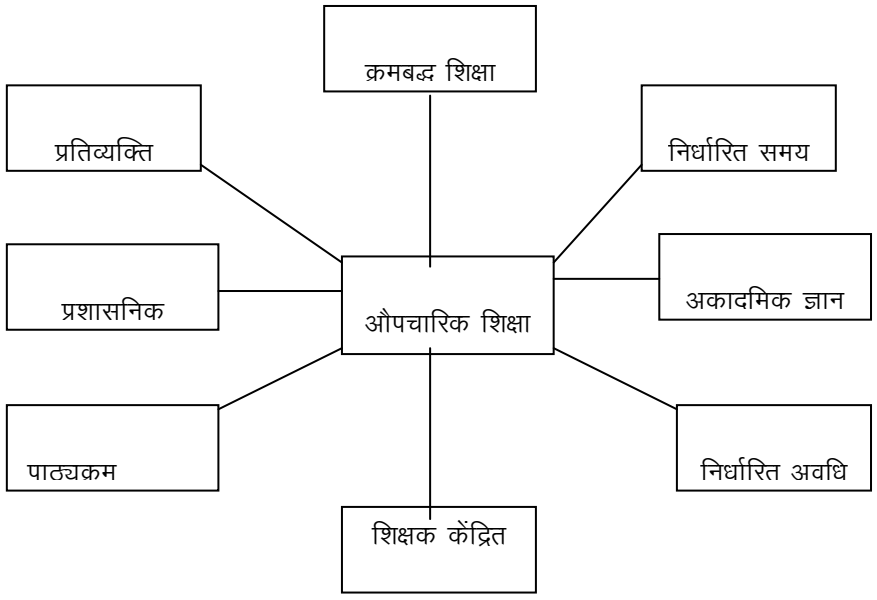

अनौपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा में कोई भी व्यक्ति किसी भी आयु में शिक्षा प्राप्त करने का फैसला कर सकता है। इसमें बच्चे और बड़े साथ-साथ शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। समय का निधार्रण आवश्यकता के अनुसार किया जाता है। जब लोगों को कामकाज से फुर्सत मिलती है तभी वे पढ़ाई के लिए आ जाते हैं। अनौपचारिक शिक्षा में व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता है। ज्ञान की बातों को अनुभव से जोड़कर देखने की प्रेरणा दी जाती है। इसमें जन-सहभागिता पर आधारित पारस्परिक चर्चा और बातचीत पर आधारित शिक्षा पर जोर रहता है।

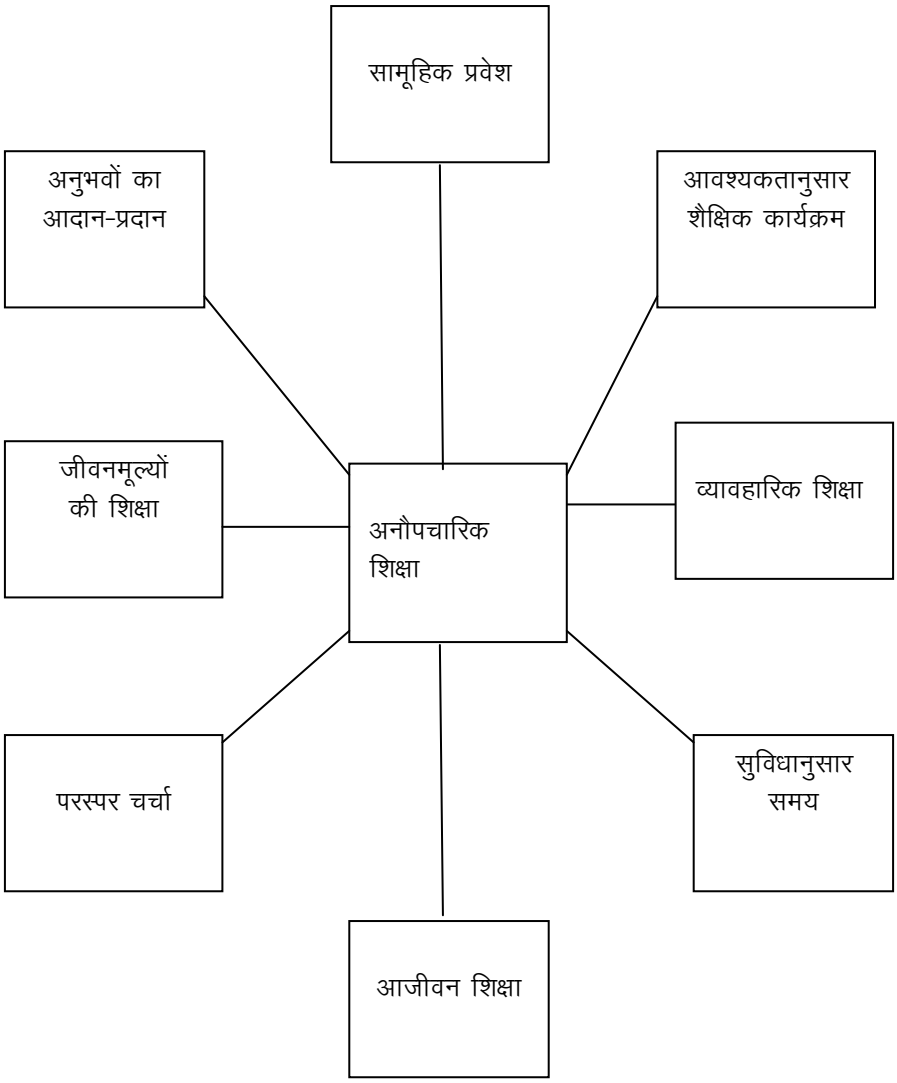

औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा की सीमाओं को लेकर विशेषज्ञों में आम राय कभी नहीं रही। प्रारंभ में मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थानों से बाहर शिक्षा, सीखने और प्रशिक्षण की गतिविधियों को अनौपचारिक शिक्षा के दायरे में रखा गया। आजकल अनौपचारिक शिक्षा को असम्पन्न समूहों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा को माना जा रहा है। साथ ही यह शिक्षा विशेष वर्ग के लोगों की चिंताओं से भी जुड़ी है। विशिष्ट उद्देश्यों पर केंद्रित होने के अलावा संगठन और शिक्षण पद्धति में भी लचीलापन इसकी विशेषता है। इस लचीलेपन के कारण साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा, निरंतर-शिक्षा और अन्य कई प्रकार के शीर्षकों वाली शिक्षा प्रणालियाँ अनौपचारिक शिक्षा में समाहित हो रहीं हैं। शिक्षाशास्त्रियों ने औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में कुछ भेद इस प्रकार किए हैं :

औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा में अंतर		
	औपचारिक शिक्षा	अनौपचारिक शिक्षा
उद्देश्य	दीर्घकालिक सामान्य प्रमाणन-आधारित	न्यूनकालिक विशिष्ट स्व-मूल्यांकन-आधारित
समय चक्र	लम्बी अवधि तैयारी हेतु समय पूर्ण-कालिक	छोटी अवधि बारम्बार आयोजित अंशकालिक
विषयवस्तु	मापदंडों पर खरी जानकारी केंद्रित अकादमिक भर्ती हेतु न्यूनतम योग्यता के आधार पर उपभोक्ताओं का चयन	सम्यक अनुभवों का आदान-प्रदान व्यावहारिक उपभोक्ताओं की योग्यताओं के आधार पर विषयवस्तु का निर्धारण
कार्यप्रणाली	संस्थागत, परिवेश से कटी हुई कठोर पाठ्यक्रम शिक्षक-केंद्रित संसाधन-निर्भर	परिवेश-आधारित समुदाय से जुड़ी हुई लचीली शिक्षार्थी केंद्रित संसाधनों की बचत
नियंत्रण	बाह्य/प्रशासकीय	स्व-नियंत्रित/प्रजातांत्रिक

वर्गीकरण

अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करने वाली विभिन्न एजेंसियों के आधार पर सुविधा के लिए निम्न वर्गीकरण किया जा सकता है :

1. **औपचारिक संस्थाओं द्वारा अनौपचारिक शिक्षा**
   - पत्राचार पाठ्यक्रम
   - मुक्त विश्वविद्यालय और
   - व्यावसायिक शिक्षा आदि
2. **संस्थागत सेवाएँ :** ऐसी लचीली संस्थागत सेवाएँ जो अशिक्षित और कम पढ़े लोगों के लिए योजनाएँ तैयार करती हैं :
   - कृषि विस्तार सेवाएँ
   - स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम
   - सामुदायिक विकास शिक्षा
   - उपभोक्ता शिक्षा
3. **रेडियो कार्यक्रम**
   - स्थानीय रेडियो
   - सामुदायिक रेडियो

15.4 अनौपचारिक शिक्षा में रेडियो की भूमिका

अनौपचारिक शिक्षा के सशक्त माध्यम के रूप में रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण है। रेडियो का उद्देश्य ही है लोगों को सूचना, शिक्षा और मनोरंजन उपलब्ध कराना। ये तीनो अलग-अलग खंडों में विभाजित नहीं होते। एक-दूसरे में मिलते रहते हैं। सूचना के साथ आजकल मनोरंजन को जोड़ा जा रहा है। यही कारण है कि रेडियो पर श्इन्फोटेनमेंट श के कार्यक्रम लोकप्रिय हो रहे हैं। शिक्षा के कार्यक्रम भी रोचक और मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किए जा सकते हैं। टेलीविजन के उपग्रही चैनलों और निजी रेडियो के मनोरंजन

आधारित कार्यक्रमों के बीच श्रोता शिक्षाप्रद कार्यक्रम भी सुनें यह आवश्यक है। इसके लिए कार्यक्रम प्रस्तुतीकरण में व्यापक बदलाव की जरूरत है।

रेडियो का अनौपचारिक शिक्षा के प्रसार में उपयोग क्यों किया जाना चाहिए? इसके अनेक कारण हैं :

- रेडियो कार्यक्रम सुनने और समझने के लिए साक्षर होना आवश्यक नहीं है।
- रेडियो की पहुँच व्यापक है। लद्दाख से लेकर लक्षद्वीप तक और अंनतनाग से लेकर अंडमान-निकोबार द्वीप समूह तक देश के सभी क्षेत्रों में रेडियो सुना जाता है।
- रेडियो आज भी सबसे अधिक विश्वसनीय माध्यम है। लोग रेडियो से प्रसारित बातों पर भरोसा करते हैं।
- रेडियो कार्यक्रम न केवल सभी भारतीय भाषाओं में प्रसारित होते हैं बल्कि देश की अनेक बोलियों में भी प्रसारित किए जाते हैं। इससे देश की अधिकांश आबादी उन्हें समझ सकती है।
- रेडियो के कार्यक्रम सस्ते मूल्य पर तैयार हो सकते हैं। उन कार्यक्रम के कैसेट और सीडी भी आसानी से बनाकर दूर-दराज तक पहुँचाए जा सकते हैं।
- रेडियो सेट ट्रांजिस्टर बहुत ही सस्ते मूल्य पर देश भर में उपलब्ध हैं। बैटरी चालित और जेब में रखे जा सकने के कारण कार्यक्रम कहीं भी और कभी भी सुने जा सकते हैं।
- रेडियो में जन-सहभागिता के अवसर अधिक हैं। अब श्रोता स्थानीय रेडियो और सामुदायिक रेडियो केंद्रों में जाकर कार्यकम में सम्मिलत हो सकते हैं। उनका संचालन कर सकते हैं।

अनौपचारिक शिक्षा की प्रमुख विशेषता है शिक्षा को लक्षित समूह तक पहुँचाना। परिवेश और मानसिक स्तर के अनुसार कार्यक्रम को ढालना। रेडियो का उपयोग बखूबी करने के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता पड़ती है। उनमें सम्मिलित हैं :

- लेखन कौशल
- अनुसंधान कौशल
- बुनियादी तकनीक का ज्ञान
- योजना पद्धति
- प्रस्तुतीकरण का ज्ञान

15.5 रेडियो प्रसारणों का बदलता दायरा

देश में रेडियो प्रसारण का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। अब आकाशवाणी के अलावा निजी चैनल और शैक्षिक प्रसारण केंद्र भी हैं। उपग्रहों के माध्यम से डिजीटल रेडियो का शुभारंभ भी हो चुका है। इंटरनेट पर भी रेडियो के कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है। समाचार तो अब टेलीफोन पर एक विशेष नम्बर डायल कर जब चाहें और जहाँ चाहें सुने जा सकते हैं।

रेडियो से प्रसारित सभी कार्यक्रम आमतौर से ‘बहुजन हिताय’ होते हैं। उनका उद्देश्य है आम आदमी के जीवन-स्तर में सुधार। यह सुधार सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक स्तर से जुड़ा है। देश के सभी वर्गों के श्रोताओं के लिए रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किए

जाते हैं। सभी आयु-समूह और रुचियों के लिए कार्यक्रम तैयार होते हैं। आकाशवाणी के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय केंद्र जन-सेवा हेतु कार्यक्रम प्रसारित करते हैं।

15.5.1 प्राथमिक केंद्र

आकाशवाणी के क्षेत्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लगभग सभी प्रमुख शहरों में प्राथमिक चैनल के केंद्र खोले गए हैं। अनौपचारिक शिक्षा के लिए ग्रामीण, महिला, कृषक, श्रमिक और बाल श्रोताओं के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। कृषि शिक्षा के लिए श्फार्म स्कूल ऑफ रेडियो श्, श्कृषि विश्वविद्यालयों से खेतों तक श् और ग्रामीण महिलाओं के लिए श्आंगनबाड़ी श् कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

15.5.2 स्थानीय रेडियो केंद्र

आकाशवाणी के स्थानीय रेडियो केंद्र श्लोकल रेडियो स्टेशन श् मूलतः समाज में उपयोगी सेवाओं को उपलब्ध कराने का काम कर रहे हैं। आमतौर से जिला स्तर पर स्थापित ये केंद्र एल.आर.एस. के नाम से जाने जाते हैं। इनका प्रसारण 50-60 किलोमीटर के दायरे में सीमित रहता है। क्षेत्र-विशेष के लिए ज़मीन से जुड़े विषयों, लोगों और विषयों के बीच माइक्रोफोन से संबंध जोड़ने का काम ये केंद्र करते हैं। अन्य केंद्रों की तरह इनका कोई निर्धारित प्रसारण चार्ट श्फिक्स्ड प्वायंट चार्ट श् नहीं होता। जरूरत के मुताबिक कार्यक्रमों में फेर-बदल किया जा सकता है। स्थानीय जिलाधिकारी, पुलिस, कृषि, स्वास्थ्य, आदिवासी और पिछड़े वर्गों की उन्नति से जुड़े विभाग कार्यक्रमों में भागीदारी कर लोगों से सीधे जुड़े रहते हैं। स्थानीय समस्याओं को उजागर करने के लिए विषय केंद्रित कार्यक्रम प्रमुखता पाते हैं। ग्रामीण मेलों, बाजारों और ग्रामों में आयोजित कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है। स्थानीय प्रतिभा को कार्यक्रमों में भागीदारी का पूरा अवसर मिलता है। स्थानीय वार्ताकार, लोक कलाकार और युवा प्रतिभाओं के अतिरिक्त सफल काश्तकार और पशुपालकों को प्रसारण में मौका मिलता है। बाहर `ओबी श् आयोजित कार्यक्रमों को कवर करने पर जोर रहता है। ये केंद्र अनौपचारिक शिक्षा के अच्छे माध्यम सिद्ध हो रहे हैं।

15.5.3 सामुदायिक रेडियो केंद्र

सामुदायिक रेडियो केंद्र (कम्युनिटी रेडियो स्टेशन) अत्यंत अल्प शक्ति के रेडियो केंद्र हैं। इनके कार्यक्रम 10-15 किलोमीटर के दायरे में ही सुने जा सकते हैं। इन केंद्रों की स्थापना, संचालन, कार्यक्रम निर्माण और प्रस्तुति सहित सभी कार्य जन-सहयोग पर आधारित होते हैं। अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ, शैक्षिक संस्थाएँ और स्थानीय निकाय जैसे ग्राम पंचायत, सहकारी समितियाँ आदि इनकी स्थापना और संचालन का दायित्व उठाते हैं। सामुदायिक रेडियो केंद्र एक ही इलाके में एक से अधिक भी हो सकते हैं। लोग अपनी आवश्यकताओं और उद्देश्यों के अनुसार उन्हें चला सकते हैं। इन केंद्रों के संचालन का अधिकांश खर्च संबंधित एजेंसी को उठाना पड़ता है। अनौपचारिक शिक्षा के लिए ये केंद्र बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। संप्रेषण कौशल को बढ़ाने और परिवर्तन को स्वीकारने के लिए जनमानस तैयार करने में इन कार्यक्रमों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। सामुदायिक रेडियो केंद्रों के कार्यक्रम आपसी संबंधों को सुधारने, व्यक्तित्व विकास और जनसहभागिता बढ़ाने में भी मददगार हो सकते हैं।

15.5.4 शैक्षिक रेडियो केंद्र

शिक्षा का प्रसार तेजी से हो इस हेतु शिक्षा को अनिवार्य बनाने की योजनाएँ हैं। इतने बड़े देश में सभी स्थानों विशेषकर दुर्गम क्षेत्रों में भौतिक सुविधाओं से समपन्न शालाओं

का विस्तार होने में समय लगेगा। ऐसे में शिक्षा को समर्पित रेडियो केंद्रों की आवश्यकता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने इस दिशा में अच्छी शुरूआत की है। उसके ‘ज्ञान वाणी’ चैनल अनेक स्थानों पर विश्वविद्यालयनीय शिक्षा, शालेय शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रम आवश्यकतानुसार प्रसारित कर रहे हैं।

15.6 रेडियो कार्यक्रमों में अनौपचारिक शिक्षा के लिए विषय-वस्तु

अनौपचारिक शिक्षा का लक्ष्य है आम आदमी के जीवन-स्तर में सुधार। यह तभी संभव है जब उसे उपलब्ध सुविधाओं, अपने अधिकारों और कर्तव्यों की समुचित जानकारी उपलब्ध हो। उसे लिखना-पढ़ना आता हो। वह लिखित सामग्री को पढ़कर अथवा रेडियो कार्यक्रमों को सुनकर बात का सही अर्थ समझ सके। उपलब्ध नए ज्ञान को अपनाकर अपने जीवन को बदल सके।

अनौपचारिक शिक्षा की विषयवस्तु इन्हीं प्रेरणाओं पर आधारित होती है। कुछ क्षेत्र इस प्रकार हैं :

- संप्रेषण कौशल में विस्तार
- परिवर्तन स्वीकारने हेतु लचीलापन
- मानव संबंधों में सुधार
- जन-सहभागिता हेतु प्रोत्साहन
- व्यक्तित्व विकास

15.6.1 संप्रेषण कौशल में विस्तार

विचारों के समुचित आदान-प्रदान के लिए हर व्यक्ति को कुशल संप्रेषक होना चाहिए। इसका सीधा अर्थ है कि बात को सुनने वाला वही अर्थ निकाले जो कि हम कहना चाहते हैं। भाषा में एक ही शब्द के अनेक भावार्थ हो सकते हैं। शब्दों का सही संदर्भ उपयोग कर ही उसका निहित अर्थ समझा जा सकता है। रेडियो कार्यक्रमों में दी जा रही जानकारी को सुनकर श्रोता समुचित कार्यवाही चरणबद्ध ढंग से कर सके, प्रसारणकर्ता का यही लक्ष्य होता है। कार्यक्रमों में पढ़ाई-लिखाई (साक्षरता) के महत्व को समझाने वाले कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा सकते हैं। बच्चों की देखभाल, स्वास्थ्य, कृषि और उपभोक्ताओं के अधिकार आदि कार्यक्रम हो सकते हैं। कानूनी सलाह, पर्यावरण संरक्षण, पंचायती राज, और श्रमदान आदि संबंधी कार्यक्रमों में भी लोगों की रुचि हो सकती है। अतएव, ऐसे सभी विषयों पर रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

15.6.2 परिवर्तनों को स्वीकारने हेतु लचीलापन

देश में प्रगति के साथ ही कई प्रकार के सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक परिवर्तन आ रहे हैं। लोगों के रोज़गार में बदलाव आ रहे हैं। गाँवों से शहरों की ओर लोग जा रहे हैं। रहन-सहन के तौर-तरीके बदल रहे हैं। नई प्रौद्योगिकी का उपयोग उद्योग-धंधों के साथ-साथ दैनिक जीवन में भी बढ़ रहा है। उदाहरण के लिए टाइपराइटरों का स्थान कंप्यूटर ले रहे हैं। आम आदमी नए परिवर्तनों को तत्काल स्वीकार नहीं करता। बदलाव का प्रतिरोध होता है। अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रम इस स्वाभाविक प्रतिरोध को कम करने के लिए लोगों को प्रेरित कर सकते हैं। रोज़गार, कृषि, स्वास्थ्य और साहस के क्षेत्रों में सफलता की कहानियाँ प्रसारित की जा सकती हैं। ऐसे ही कार्यक्रमों की बहुत आवश्यकता है।

15.6.3 मानव संबंधों में सुधार

मानव समाज में आपसी संबंधों का बड़ा महत्व है। मिलजुलकर काम करने की आदत से सभी तरह के काम जल्दी पूरे होते हैं। देश का विकास तेजी से होता है। सामुदायिक

सहयोग की भावना बढ़ाने में सहकारी समितियों, ग्राम पंचायतों, स्वयंसेवी संस्थाओं आदि का बड़ा हाथ है। अनौपचारिक शिक्षा से जुड़े कार्यक्रमों में ऐसी संस्थाओं के महत्व को उजागर करने वाले कार्यक्रम प्रसारित किए जा सकते हैं।

15.6.4 जन-सहभागिता हेतु प्रोत्साहन

जनतंत्र की सफलता जनसहभागिता पर आधारित है। सामाजिक और प्रशासनिक स्तर पर जनसहभागिता बढ़ाने के लिए प्रेरक कार्यक्रम प्रसारित किए जा सकते हैं। रेडियो में फोन-इन कार्यक्रमों में निर्णयों को प्रभावित कर सकने वाले मुद्दों पर व्यापक चर्चा कराने के प्रयास होना चाहिए। बॉक्स-पॉप (लोगों के विचारों पर आधारित) कार्यक्रम भी प्रसारित किए जा सकते हैं।

15.6.5 व्यक्तित्व विकास

अनौपचारिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य लोगों के व्यक्तित्व विकास में सहायता करना है। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के अतिरिक्त सुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा, गौरव और आत्मतुष्टि जैसी भावनाओं के विकास से ही व्यक्तित्व सजता-संवरता है। अनौपचारिक शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो सकते हैं।

रेडियो कार्यक्रमों में अनौपचारिक शिक्षा की विषयवस्तु क्षेत्र विशेष के अनुरूप बदलती रहती है। साथ ही तैयार किए जाने वाले कार्यक्रम लक्षित समूह की आयु, उनके स्तर और कार्य के अनुसार बदलते रहते हैं। रेडियो कार्यक्रमों में हमें सदैव निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

- शिक्षार्थियों की दैनिक आवश्यकताओं, रीति-रिवाजों, परंपराओं, सांस्कृतिक क्रिया-कलापों आदि का ध्यान रखना।
- बच्चों और बड़ों के सम्मिलित समूह को समस्यामूलक स्थिति में लाकर उसका सामूहिक विश्लेषण और निदान खोजने के लिए प्रेरित करना।
- दैनिक जीवन की घटनाओं को सैद्धांतिक नियमों से जोड़कर देखने की प्रेरणा देना।

रेडियो कार्यक्रमों में उपर्युक्त सभी बातों का समावेश कर कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए कुछ तकनीकें अपनाई जा सकती हैं :

- अपनी बात (उद्देश्य) को अप्रत्यक्ष रूप से कहना।
- बात से बात निकालने की पद्धति।
- आम जीवन से जुड़े उदाहरणों का उपयोग।
- बातचीत या चर्चा के माध्यम से बात कहना।

15.7 रेडियो कार्यक्रम प्रस्तुति के विविध रूप

रेडियो कार्यक्रम प्रस्तुति की अनेक विधाएँ हैं। इनमें से कुछ विधाओं में आलेख का होना आवश्यक है। कुछ विधाओं में समाचार, वार्ता, उद्घोषणा, सामाजिक चर्चा, रूपक, नाटक, कविता, कहानी आदि में पहले आलेख लिखे जाते हैं। उसके बाद उनका प्रस्तुतीकरण होता है।

रेडियो की कुछ विधाएँ ऐसी हैं जिनमें समुचित आलेख की आवश्यकता नहीं होती। चर्चा के कुछ बिंदु निर्धारित किए जाते हैं। केवल मुख्य बिंदु ही लिखे जाते हैं ताकि विषय पर

केंद्रित बातचीत हो सके। तारतम्य बना रहे। निर्धारित समय सीमा में कार्यक्रम समापन के समय पूरी बात स्पष्ट हो सके। ऐसी विधाओं में भेंटवार्ताएँ, बातचीत, डाक्युमेंट्री, कम्पेयरिंग जैसे कार्यक्रम आते हैं। फोन-इन जैसे कार्यक्रम भी सीधी बातचीत प्रश्नोत्तर पर आधारित होते हैं।

अनौपचारिक शिक्षा के लिए रेडियो विशेषकर स्थानीय, सामुदायिक और शैक्षिक रेडियो केंद्रों से प्रस्तोता के रूप में हम सूचनाओं और निर्देशों को विभिन्न विधाओं में प्रस्तुत कर सकते हैं :

- **वार्ता** सूचनाओं, निर्देशों और विचारों को सुनियोजित क्रम से प्रस्तुत करने हेतु सशक्त विधा मानी जाती है।
- **भेंटवार्ता** अनुभवों, विचारों और राय को स्वाभाविक और जीवंतता से प्रस्तुत करने के लिए उपयोगी है। विशेषज्ञों से जानकारी प्राप्त करने में भेंटवार्ता कारगर विधा है।
- **परिचर्चा** के माध्यम से एक ही विषय के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने में सहायता मिलती है। इसमें विविध प्रकार के विचारों और सुझावों को प्रस्तुत करना आसान होता है। परिचर्चाएँ श्रोताओं को विषय पर सोच-विचार की प्रेरणा देती हैं।
- **रूपक** और **डाक्युमेंट्री** के माध्यम से श्रोताओं को ऐसी परिस्थितियों का साक्षात अनुभव कराया जा सकता है जो उनकी कल्पना से परे हो सकता है।
- **रेडियो नाटक** समाज के संवेदी मुद्दों को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उपयोगी विधा है। मनोरंजन के साथ उपयोगी संदेश देना संभव है।
- **संगीत** कार्यक्रमों का उपयोग अनौपचारिक शिक्षा में बखूबी किया जा सकता है। गीतों और लोकगीतों में उपयोगी संदेश ढालकर उन्हें जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है।
- **पत्रिका कार्यक्रम** में अनौपचारिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों को एक साथ अनेक विधाओं में प्रस्तुत किया जा सकता है।

स्थानीय और सामुदायिक रेडियो केंद्रों पर स्थानीय समाचारों और गतिविधियों पर आधारित कार्यक्रम प्रसारित किए जा सकते हैं। इससे अनौपचारिक शिक्षा लेने के इच्छुक शिक्षार्थियों को प्रेरित किया जा सकता है। उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी दी जा सकती है। अगर आवश्यक हो तो सीधे पाठ भी प्रसारित किए जा सकते हैं। ‘फार्म स्कूल ऑफ एयर’ किसानों को कृषि और पशुपालन से जुड़ी जनकारी को क्रमबद्ध रूप से देने में सफल रहे हैं। महिलाओं के लिए ‘आंगनबाड़ी’ कार्यक्रम भी लोकप्रिय है। समस्या-समाधान के लिए भी फोन-इन जैसे कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जा सकता है। श्रोता-क्लबों को भी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

रेडियो से प्रसारित कार्यक्रम कोई भी हो उसमें कुछ प्रमुख बातों पर ध्यान देना आवश्यक है :

- भाषा सरल और सहज हो
- विचारों में क्रमबद्धता हो
- पिछले संदर्भों का उल्लेख कम से कम हो
- व्यावहारिक उदाहरणों का समावेश हो
- रोचकता का ध्यान रखा जाए

रेडियो कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण हेतु समुचित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यह व्यावहारिक प्रशिक्षण स्टुडियो में कार्य करते हुए ही मिल सकता है। स्टुडियो में

ध्वन्यांकन, सम्पादन, प्रतिलिपि निर्माण जैसे कार्य संपन्न होते हैं। कार्यक्रमों का पूर्वाभ्यास करके उन्हें ध्वन्यांकित किया जाता है। रेडियो नाटक, रूपक आदि में विभिन्न कलाकार आकर माइक्रोफोन के सामने स्टुडियो में रिकार्डिंग करते हैं। कार्यक्रम निर्माण के समय उसमें समुचित ध्वनि प्रभावों को जोड़ा जाता हे। उसके बाद समुचित सम्पादन भी मशीनों पर ही होता है। बाद में अंतिम टेप तैयार कर प्रसारण के लिए भेजा जाता है।

15.8 सारांश

अनौपचारिक शिक्षा एक ऐसी लचीली शिक्षण पद्धति है जो स्थानीय परिवेश, आवश्यकताओं और औपचारिक शिक्षा से वंचित लोगों को शिक्षित बनाती है। औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा की सीमाओं को लेकर विशेषज्ञों में आम राय नहीं रही है। अब दोनों पद्धतियों में कुछ भेद प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से किए गए हैं। औपचारिक शिक्षा निर्धारित समय पर निश्चित अवधि के लिए दी जाती है। वह पाठ्यक्रम से बंधी रहती है। शिक्षक केंद्रित होने के कारण ज्ञान का बहाव एकतरफा उपर से नीचे की ओर होता है। इसका अंतिम लक्ष्य प्रमाणित डिग्री या डिप्लोमा प्रदान करना है। अनौपचारिक शिक्षा परिवेश और आवश्यकताओं से जुड़ी है। उसका पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों की जरूरतों के अनुरूप ढलता है। उसके तरीके भी अलग हैं। परस्पर विचार-विमर्श और अनुभवों के आदान-प्रदान पर आधारित भागीदारी महत्वपूर्ण होती है।

अनौपचारिक शिक्षा को बढ़ावा देने में रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण है। रेडियो के प्राथमिक केंद्रों के अलावा स्थानीय और सामुदायिक केंद्रों का उपयोग बखूबी हो सकता है। रेडियो प्रसारण की सभी विधाओं - वार्ता, भेंटवार्ता, परिचर्चा से लेकर रूपक, नाटक और संगीत तक - का उपयोग अनौपचारिक शिक्षा में हो सकता है। विषयवस्तु संप्रेषण कौशल में विस्तार और व्यक्तित्व विकास से लेकर मानव संबंधों में सुधार, जन सहभागिता और परिवर्तन को स्वीकारने हेतु लचीलेपन से जुड़ी हो सकती है। प्रस्तुतीकरण में कार्यक्रम की सहजता, सरलता, रोचकता और संदेशों की स्पष्टता पर ध्यान दिया जाना चाहिए। अनौपचारिक शिक्षा को ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों में लोकप्रिय बनाने में रेडियो सस्ता, सर्वसुलभ और विश्वसनीय माध्यम है। इसका भरपूर उपयोग होना चाहिए।